कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



उन्नीसवीं सदी

- 19वीं सदी में यूरोप ने जन-साक्षरता में लंबी-लंबी छलाँगें लगाईं।
- इस कारण से महिलाओं और बच्चों के रूप में एक नया पाठकवर्ग तैयार हुआ।

बच्चे, महिलाएं और मजदूर

बच्चे :-

- 19वीं सदी के आखिर में प्राथमिक शिक्षा के अनिवार्य होने के कारण बच्चे भी अहम पाठक बन गये थे।
- तब प्रकाशन उद्योग के लिए पाठ्य पुस्तकों का उत्पादन महत्वपूर्ण हो गया।
- 1857 में फ्रांस में सिर्फ बाल-पुस्तकें छापने क लिए एक प्रेस या मुद्रणालय स्थापित किया गया।
- इस प्रेस में पुरानी और नई दोनों तरह की परी-कथाओं और लोक कथाओं का प्रकाशन किया गया।
- जर्मनी के ग्रिम-बंधुओं ने बरसों लगाकर किसानों के बीच से लोक कथाऐं जमा की।
- उनके द्वारा एकत्रित सामग्री को संपादन कर 1812 में उन कहानियों का संकलन छापा गया।
- बच्चों के लिए अनुपयुक्त सामग्री, या जो चीजें कुली वर्गों को अश्लील लगती थीं, उन्हें प्रकाशित संस्करण में शामिल नहीं किया जाता था।
- इस प्रकार से पुरानी ग्रामीण लोककथाओं को एक नया रूप मिला।
- हालांकि छपने से वे दर्ज तो हुईं लेकिन उनका रूप बदल गया था।

महिलाऐं :-

- अब महिलाऐं पाठिका एवं लेखिका की भूमिका में आ गई थीं।
- पेनी मैगजींस (या एक पैसिया-पत्रिकाऐं) खास तौर से उन्हीं के लिए होती थीं।
- ये पत्रिकाऐं सही चाल चलन व गृहस्थी सिखाने वाली निर्देशिकाऐं थीं।
- 19वीं शताब्दी में जब उपन्यास छपने लगे तो महिलाऐं उनकी अहम पाठक थीं।
- मशहूर उपन्यासकारों में अग्रणी लेखिकाऐं :- जेन-ऑस्टिन, ब्रॉण्ट-बहनें, जार्ज इलियट आदि थीं।
- उनके लेखन से नई नारी की परिभाषा उभरी:-
  - जिसका व्यक्तित्व सुदृढ़ था।
  - जिसमें गहरी सूझ-बूझ थी।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

❖ जिसका अपना दिमाग था तथा अपनी इच्छा शक्ति थी।

पेनी या एकपैसिया मैग्नीज का आमुख



- पेनी मैग्नीज का प्रकाशन इंग्लैंड में (1832–1850) के बीच सोसायटी फॉर द डिफ्यूजन ऑफ यूजफुल नॉलेज ने किया।
- यह मूलत: मजदूर वर्ग के लिए थी।

मजदूर :–

- 17वीं सदी से ही किराये पर किताब देने वाले पुस्तकालय अस्तित्व में आ गए थे।
- 19वीं सदी के इंग्लैंड में ऐसे पुस्तकालयों का उपयोग मजदूरों, दस्तकारों और निम्नवर्गीय लोगों को शिक्षित करने के लिए किया गया था।
- काम के दिन के छोटे होने के बाद मजदूरों को अपने सुधार और आत्म–अभिव्यक्ति के लिए थोड़ा वक्त मिलने लगा था।
- उन्होंने बड़ी संख्या में राजनीतिक पर्चे और आत्मकथाएं लिखीं।

यॉर्कशायर के एक मैकेनिक थॉमस वुड ने बताया कि वह पुराने अखबार खरीदकर शाम के वक्त आग की रोशनी में पढ़ता था, क्योंकि उसके पास मोमबत्ती के लिए पैसे नहीं होते थे।
गरीबों की आत्कथाओं से हमें पता चलता है कि वे मुश्किल हालात में पढ़ने के लिए जद्दोजहद करते थे।
20वीं सदी के रूसी–क्रांतिकारी लेखक मैक्सिम–गोर्की की 'मेरा बचपन और मेरे विश्वविद्यालय इन संघर्षों की कहानियां हैं।

नये तकनीकी परिष्कार

19वीं सदी :–

- 18वीं सदी के अंत तक प्रेस धातु से बनने लगे थे।
- पूरी 19वीं सदी के दौरान छापखाने की तकनीक में लगातार सुधार हुआ।
- 19वीं सदी के मध्य तक न्यूयार्क के रिचर्ड एम. हो. ने शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस को कारगर बना लिया था।
- इससे प्रति घंटे 8000 शीट या ताव छप सकते थे।
- सदी के अंत तक ऑफसेट प्रेस आ गया था जिससे एक साथ 6 रंग की छपाई मुमकिन थी।

20वीं सदी :–

- 20वीं सदी के शुरूआत से ही, बिजली से चलने वाले प्रेस के बल पर छपाई का काम बड़ी तेजी से होने लगा।
- कुछ चीजें और भी हुईं :–

(i) कागज डालने की विधि में सुधार हुआ।
(ii) प्लेट की गुणवत्ता बेहतर हुई।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

(iii) स्वचालित पेपर रील और रंगों के लिए फोटो-विद्युतीय नियंत्रण भी काम में आने लगे।

- इस प्रकार से कई छोटी-छोटी मशीनी इकाइयों में सुधार की बदौलत छपे हुए पन्ने का रंग रूप ही बदल जायेगा।
- मुद्रकों और प्रकाशकों ने अपने उत्पाद बेचने के लिए नये गुर अपनाये।
- 19वीं सदी की पत्रिकाओं ने उपन्यासों के धारावाहिक छापे जिससे उपन्यास लिखने की एक खास शैली विकसित हुई।
- 1920 के दशक में लोकप्रिय किताबों की एक सस्ती श्रृंख्ला -शिलिंग श्रृंखला के तहत छापी गयी।
- किताबों की जिल्द का आवरण या डस्ट कवर भी 20वीं सदी की तकनीकी नवइयत है।
- 1930 की मंदी के आने से प्रकाशकों को किताबों की बिक्री गिरने का भय हुआ, लिहाजा पाठकों की जेब का ध्यान रखते हुए उन्होंने सस्ते पेपरबैक या आजिल्द संस्करण छापे।

इंग्लैंड के एक रेलवे स्टेशन पर लगे विज्ञापन,अल्फ्रेड कॉन्कानेन द्वारा बनाया गया लिथोग्राफ - 1874



- छपी हुई सूचनाऐं और इश्तेहार सड़कों की दीवारों प्लेटफार्म और सार्वजनिक इमारतों पर लगाई जाती थीं।

भारत का मुद्रण संसार

मुद्रण युग से पहले की पांडुलिपियाँ :-

- भारत में संस्कृत, अरबी, फारसी और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में हस्त-लिखित पांडुलिपियों की पुरानी और समृद्ध परंपरा थी।
- पांडुलिपियाँ ताड़ के पत्तों या हाथ से बने कागज पर नकल कर बनाई जाती थीं।
- कभी -कभी तो पत्तों पर बेहतरीन तसवीरें भी बनाई जाती थीं।
- फिर उन्हें उम्र बढ़ाने के ख्याल से तख्तियों की जिल्द में या सिलकर बाँध दिया जाता था।
- 19वीं सदी के अंत तक, छपाई के आने के बाद भी पांडुलिपियाँ छापी जाती रहीं थीं।

जयदेव के गीत-गोविंद के कुछ पन्ने, 18वीं सदी

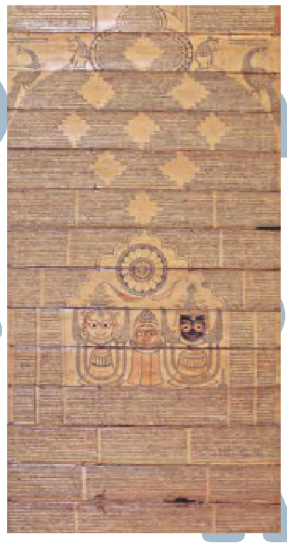

हाफिज के दीवान के कुछ पन्ने-1824



PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- यह एकार्डियन शैली में हाथ से लिखी पांडुलिपि का एक नमूना है।

ऋग्वेद के कुछ पन्ने

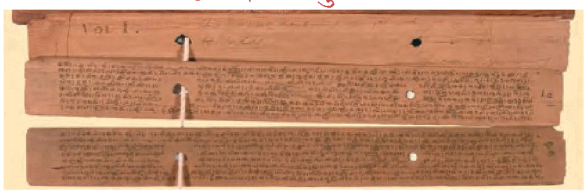

- प्रिंट के आगमन के काफी बाद तक हस्तलिखित पांडुलिपियाँ प्रकाशित की जाती रहीं।
- यह पांडुलिपि मलथालम भाषा में 18वीं सदी में बनाई गई।
- 14वीं सदी के शायर हाफिज की संपूर्ण शायरी दीवान में संकलित है।
- पेज की खुशनसीबी, नक्काशी और डिजाइन देखने लायक है।
- लेटर प्रेस के आने के बाद भी इस तरह की पांडुलिपियाँ अमीरों के लिए बनाई जाती थी।
- पांडुलिपियाँ नाजुक होती थीं तथा काफी मंहगी भी।
- एक तो उन्हें बड़ी सावधानी से पकड़ना होता था, दूसरे लिपियों के अलग-अलग तरीके से लिखे जाने के कारण उन्हें पढ़ना भी आसान नहीं होता था।
- इसलिए उनका व्यापक दैनिक इस्तेमाल नहीं होता था।
- पूर्व औपनिवेशिक बंगाल में ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक पाठशालाओं का बड़ा जाल था, लेकिन विद्यार्थी आमतौर पर किताबें नहीं पढ़ते थे।
- गुरू याददाश्त से किताबें सुनाते थे और विद्यार्थी उन्हें लिख लेते थे।
- इस तरह कई सारे लोग बिना कोई किताब पढ़े साक्षर बन जाते थे।

छपाई भारत आई :-

- भारत में सबसे पहले प्रिंटिंग-प्रेस 16वीं सदी में गोवा में पुर्तगाली धर्म प्रचारकों के साथ आई।
- जेसुइट-पुजारियों ने कोकणीं सीखी और कई पुस्तिकाऐं छापी।
- 1674 ई. तक कोंकणी और कन्नड़ भाषाओं में लगभग 50 किताबें छप चुकी थीं।
- कैथोलिक पुजारियों ने 1579 मे कोचीन में पहली तमिल किताब और उन्होंने 1713 में पहली मलयालम किताब भी छापी।
- डच प्रोटेस्टेंट धर्म प्रचारकों ने भी 32 तमिल किताबें छापीं, जिनमें से कई पुरानी किताबों का अनुवाद थीं।
- अंग्रेजी भाषी प्रोष भारत में काफी समय तक विकास नहीं कर पाया था, यद्यपि ईस्ट इंडिया कंपनी ने 17वीं सदी के अंत तक छापेखाने का आयात शुरू कर दिया था।

हिक्की की साप्ताहिक-पत्रिका :-

- 1780 से जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने बंगाल गजट नामक एक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन शुरू किया।
- उसने खुद को यूं परिभाषित किया -

"हर किसी के लिए खुली एक व्यवसायिक पत्रिका, जो किसी के प्रभाव में नहीं है।"

- यानी यह पत्रिका भारत में प्रेस चलाने वाले औपनिवेशिक शासन से आजाद, निजी अंग्रेजी उद्यम थी और इसे अपनी स्वतंत्रता पर अभिमान था।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- हिक्की ढेर सारे विज्ञापन छापता था, जिसमें दासों की बिक्री से जुड़े इश्तेहार भी शामिल थे।
- लेकिन साथ ही वह भारत में कार्यरत वरिष्ठ अंग्रेज अधिकारियों से जुड़ी गपबाजी भी छापता था।
- इससे नाराज होकर गवर्नर जनरल वारेन-हेस्टिंग्स ने हिक्की पर मुकदमा कर दिया।
- साथ ही ऐसे सरकारी आश्रय प्राप्त अखबारों के प्रकाश को प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया जो औपनिवशिक राज की छवि पर होते हमलों से इसकी रक्षा कर सकें।
- 18वीं सदी के अंत तक कई सारी पत्र-पत्रिकाऐं छपने लगीं।
- कुछ हिंदुस्तानी भी अपने अखबार छापने लगे थे।
- इन प्रयासों में पहला था राजा राममोहन राय के करीबी रहे गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा प्रकाशित बंगल गजट।

विलियम बोल्ट्स नामक एक व्यक्ति को 1768 ई. में, इस तरह की एक सूचना कलकत्ता की एक सार्वजनिक इमारत में टाँगने की जरूरत महसूस हुई-

''जनसाधारण के लिए : मि. बोल्ट्स पब्लिक को यह बताने के लिए इस तरीके का सहारा ले रहे हैं कि - चूंकि शहर में छापेखाने की घोर कमी से नुकसान होता है..... इसलिए वे उस व्यक्ति का हर संभव उत्साहवर्धन करेंगे, जो छपाई में माहिर हो।''

पर जल्द ही मि. बोल्ट्स इंग्लैंड चले गये और यह वादा हवा में लटका रहा।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here